कल सुबह के लिए

❑ रामसिंह

बच्चे असफल क्यों होते हैं (जान हॉल्ट) बाल-हदय की गहराइयां, तोत्तो चान और गीजू भाई का तमाम शिक्षा साहित्य असल में 'अनुभव डायरियां' ही हैं । एक शिक्षक की डायरी को कई कोणों से देखा जा सकता है । यहां हमने बच्चों के नाम बदल दिये हैं । 'मेघ' और 'बादल' बच्चों के समूहों के नाम हैं । ये दोनों समूह उच्च प्राथमिक स्तर के हैं जिनमें ये बच्चे हैं ।

16 अगस्त, 1995

काफी दिनों पश्चात् आज पुन: मैं डायरी लिखना शुरु कर रहा हूँ । पहले शायद मैं निरुद्देश्य लिखता था पर इस बार मेरा डायरी लिखने का कुछ उद्देश्य है । मैं भगवान यदि हो तो उससे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे इस उद्देश्य में सफल करे । मेरे कुछ उद्देश्य हैं जो निम्न हैं :

मैं चाहता हूँ कि मैं अपनी कमियों को देख सकूं, उनमें सुधार कर सकूं, अच्छा बनूं, सबसे अच्छा व्यवहार करुं व सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि मैं अपने समूह में ठीक ढंग से कार्य कर सकूं ।

मेरा मानना यह है कि मैं समूह के अन्दर प्रत्येक विषय में इस ढंग से कार्य करूं कि बच्चों को आनन्द आये । टॉपिक रुचिकर लगे पर मैं अपने इस उद्देश्य में कभी-कभी ही सफल हो पाता हूँ ।

मैं चाहता हूँ कि मैं बच्चों से इस ढंग से व्यवहार करुं कि प्रत्येक बच्चा मुझे चाहे, पर मैं अपने इस उद्देश्य में भी सफल नहीं हो पाता हूं ।

जब अपने अन्दर कमियां तलाशता हूँ तो वो मुझे नहीं दिखतीं पर ये कमियां शायद मेरे व्यवहार में या मेरे स्वभाव में कहीं न कहीं जरुर छुपी होंगी जो मुझे साफ दृष्टिगोचर नहीं होती है । मैं अपने आपको हतोत्साहित महसूस करने लगता हूँ । ऐसे में मेरा मन गहरी पीड़ा दु:ख व कुण्ठा से भर जाता है । अपने आप से नफरत-सी होने लगती है । क्या करुं, क्या न करुं ? सीमा आज मुझसे नहीं बोली । शमशेर के व्यवहार में मेरे प्रति रूखापन था । उससे चर्चा करनी पड़ी । वेणु, मनीषा, सुरेखा, सुनीता का व्यवहार पहले जैसा ही है । हालांकि न तो मैंने उन्हें कभी डांटा है और न कभी कठोर शब्दों में बात की है । हमेशा इनसे प्यार से बात करने की कोशिश की है पर इनका व्यवहार मेरे प्रति बहुत ही रुखा रहा है । इस वर्ष की सबसे सुखद बात मेरे प्रति यह रही की उर्मिला व समीना जो पिछले वर्ष मुझसे काफी दूर रहती थीं, मुझसे बातें करने लगी हैं । वे काम भी ठीक ढंग से करने लगी है ।

17 अगस्त, 1995

आज समूह में मेघ समूह को मैने सलेबस सोमवार को मैं उनका टैस्ट लेने जा रहा हूं, दिया है । सब बच्चे खुश थे । पर लीला, वेणु, सीमा मेरे कालांश में मुंह बन्द करके ही बैठे रहते हैं । बादल समूह मुझसे खुश रहता है । मैं उन्हें नई नई बातें समूह में कहानियों के रूप में या अन्य किसी रूप में बताता रहता हूं इससे वे खुश रहते हैं । सुनीता व सुरेखा भी अब खुलने लगी हैं । मैं उन्हें पढ़ाता पढ़ाता व बोलता बोलता थक गया था।

छुट्टी के पश्चात मैंने मेघ प्रथम समूह का ग्रामर का कालांश लिया था। मैं उन्हें प्रजेन्ट टेंस पूरा पढ़ा चुका हूँ । सोमवार को मैं इसमें से इनका टैस्ट लेने वाला हूं । ये चारों टेंस बालकों को पृथक पृथक सब को आ गये । पर आज जब संयुक्त रुप से मैंने इन्हें पूछा तो वे इसमें अटक गये । पर ठीक समझाने व याद दिलाने पर सबको आ गये । पर मीना अपना सिर थाम कर बैठी रही । बार बार समझाने पर भी उसने समझने का प्रयत्न नहीं किया । तो मैंने उसे उठ कर बाहर जाने के लिये कह दिया व वह चली गई । जिसका मुझे दुख: है मुझे उससे ऐसा नहीं कहना चाहिये था । छुट्टी के पश्चात उसने अपने इस व्यवहार पर मुझसे माफी मांगी ।

पर मैं आज के अपने व्यवहार से संतुष्ट नहीं था। ◆